खंड-'क'

1. (क) - आत्मनिर्भरता / स्वावलंबन ;
- जीवन में आने वाली बाधाओं और निराशा का सामना करने के लिए
(ख) - जीवन में सभी कार्य कर सकने के लिए ;
- संघर्ष करके / मेहनत करके
(ग) - आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आत्मबल, आत्मरक्षा, साहस, संतोष, धैर्य आदि गुण स्वावलंबन के सहोदर हैं। ;
- इन्हीं गुणों की सहायता से हम स्वावलंबी बनते हैं।
(घ) - हमेशा दूसरों पर निर्भर रहता है।
- जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।
- समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में कोई सहयोग नहीं दे पाता।
(कोई दो बिंदु अपेक्षित)
(ङ) - आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता
(च) आत्मनिर्भरता / स्वावलंबन

खंड-'ख'

2. (क) - पत्थर की मूर्ति थी परंतु चश्मा असली था। / मूर्ति पत्थर की थी पर / और चश्मा असली था।
(ख) -मूर्तिकार ने सुनकर जवाब दिया।
(ग) - काशी में संगीत आयोजन की एक परंपरा है, जो प्राचीन एवं अद्‌भुत है। /
काशी में संगीत आयोजन की जो एक परंपरा है, वह प्राचीन एवं अद्‌भुत है। /
काशी में जो संगीत आयोजन की एक परंपरा है, वह प्राचीन एवं अद्‌भुत है।
(घ) - आश्रित उपवाक्य - जिसका नाम कैप्टन है
भेद - विशेषण आश्रित उपवाक्य

3. (क) नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।
(ख) दर्द के कारण उससे खड़ा ही नहीं हुआ गया।
(ग) परीक्षा के बारे में अध्यापक ने क्या कहा?
(घ) नवाब साहब द्वारा हमारी ओर देखकर कहा गया कि खीरा लज़ीज़ होता है।

4. (क) - प्रदूषण - संज्ञा (भाववाचक), पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक
(ख) - खरीदे होंगे - क्रिया (सकर्मक), पुल्लिंग, बहुवचन, भूतकाल, 'खीरा' कर्म
(ग) थककर - क्रियाविशेषण (रीतिवाचक), 'लेट गए' क्रिया की विशेषता
(घ) - मेरा - विशेषण (सार्वनामिक), एकवचन, पुल्लिंग, विशेष्य 'मेदा'

5. (क) - रौद्र रस
(ख) - स्वयं करे
(ग) - निर्वेद
(घ) - जो सहृदय के भावों को उद्दीप्त करे
(ङ) - सहृदय के हृदय में स्थायी रूप से विद्यमान भाव

खंड-'ग'

6. (क) - मूर्ति पर मास्टर द्वारा चश्मा बनाना भूल जाना / कैप्टन द्वारा मूर्ति पर हर बार नया चश्मा लगाना ;
- पान वाले का स्वभाव ऐसा था कि उसे ऐसी बातों में मज़ा आता था।
(ख) - वह ड्राइंग मास्टर था किंतु उसे मूर्ति बनाने का कार्य दे दिया गया था।
- सीमित समय में बनाने का दबाव
(ग) - पत्थर की मूर्ति पर काँच वाला पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए, तय नहीं कर पाया होगा।
- चश्मा बनाने का प्रयास तो किया होगा लेकिन बना नहीं पाया होगा।
- कुछ और बारीकी के चक्कर में चश्मा टूट गया होगा।
- पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा।
(कोई दो बिंदु अपेक्षित)

7. (क) - रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती थीं।
- हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते थे।
- उनके हाथों में तेज़ी और मस्ती आ जाती थी।

- नर-नारी भी गुनगुनाने लगते थे।
- मेड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते थे। (कोई दो बिंदु अपेक्षित)

(ख) स्वयं करे

(ग) - हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए आजीवन प्रयास करते रहे/ अकाट्य तर्क प्रस्तुत करते रहे।
- अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश तैयार किया।
- मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का रूपांतर 'नीलपंछी' के नाम से किया।
- साहित्यिक गोष्ठियों में सक्रिय भूमिका (कोई दो बिंदु अपेक्षित)

(घ) - महत्वाकांक्षा, स्वाभिमान, दृढ़ संकल्प, स्वतंत्रता आंदोलन में रुचि, स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहन, ज़रूरतमंद विद्यार्थियों की सहायता, स्वतंत्र विचार। (कोई दो बिंदु अपेक्षित)
- अहंकार, शक, क्रोध, यश-लिप्सा, गोरे-काले रंग का भेदभाव, महिलाओं की आज़ादी की सीमा को तय करना, पत्नी के प्रति संवेदनहीनता, परिस्थितियों के दवाब में आ जाना (कोई दो बिंदु अपेक्षित)

(ङ) जिस प्रकार कस्तूरी मृग के भीतर ही कस्तूरी की गंध होती है और वह उसकी तलाश में भटकता रहता है उसी प्रकार बिस्मिल्ला खाँ सुरों के सच्चे ज्ञाता होते हुए भी ईश्वर से सच्चे सुर की प्रार्थना करते रहते थे।

8. (क) कृष्ण गोपियों को आश्वासन देकर गए परंतु वापस नहीं आए। गोपियाँ व्यंग्य कर रही हैं कि अब वे एक राजनीतिज्ञ की तरह व्यवहार करने लगे हैं।

(ख) - विरह वेदना की तीव्रता
- कृष्ण द्वारा मिलने का वादा नहीं निभाने की व्यथा
- गोपियों द्वारा यह जताया जाना कि अब उन्हें कृष्ण से कोई उम्मीद शेष नहीं है।

(ग) - प्रजा का कल्याण करना, प्रजा को अन्याय से मुक्ति दिलाना, अपनी प्रजा को संत्रस्त न करना ;
- राजधर्म का उल्लेख कर यह याद दिलाना कि सबके प्रति समभाव रखना उनका कर्तव्य है। वे भी उनकी प्रजा हैं। अतः उनके साथ भी अन्याय न होने देना उनका धर्म है।

9. (क) - फागुन महीने में प्राकृतिक सौंदर्य चरम पर होता है।
- मन कल्पनाओं में खोकर उड़ान भरने लगता है।
- वातावरण अत्यंत सुहावना तथा मादक बन जाता है।
- मन खुशी तथा प्रसन्नता से भर उठता है।

(ख) - तालाब छोड़कर कमल उसकी झोंपड़ी में खिल गया है।

(ग) - जिस तरह से मृग प्यास बुझाने के लिए भटकता रहता है, उसी तरह से व्यक्ति प्रभुता की कामना में भटकता रहता है।
- प्रभुता या बड़प्पन का अहसास एक भ्रम है / प्रभुता की कामना सदा अतृप्त रहती है।

(घ) - अपनी आवाज़ को ऊँचा न उठाने को संगतकार की कमज़ोरी या असफलता नहीं मानना चाहिए।
- संगतकार को यथायोग्य सम्मान देना चाहिए / संगतकार के प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए।

(ङ) स्वयं करे

10. (क) - बच्चे सरल और निश्छल स्वभाव के होते हैं, वे लड़ाई-झगड़े की कटुता को अधिक देर तक अपने मन में नहीं रख सकते।

पाठ में उदाहरण -
- माँ के द्वारा भोलानाथ के बालों में कड़वा तेल डालना और उनका रोना फिर पिता के साथ बाहर जाने पर साथियों के साथ हँसना-खेलना
- मूसन तिवारी को चिढ़ाए जाने पर गुरुजी का लड़कों की खबर लेना, भोला नाथ का रोना और साथियों के झुंड में वापस जाकर खेलना (अन्य उपयुक्त उदाहरण भी स्वीकार्य)

(ख) - यह पता लगाने के लिए कि लाट कब, कहाँ और किस पत्थर से निर्मित हुई।

(ग) - यात्राओं से हम वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ भाषा, रीति-रिवाज़, परंपराओं, मान्यताओं से भी परिचित होते हैं।
- हम दूर बैठकर किसी स्थान की संस्कृति का अनुभव नहीं कर सकते।

उदाहरण —
- लेखिका ने प्रार्थना के बोल नेपाली युवती से सीखे।
- वहाँ के निवासियों की कड़ी मेहनत, अभाव और गरीबी को साक्षात देखा।
- धर्म चक्र से जुड़ी आस्था और श्वेत 108 बौद्ध पताकाओं की मान्यता को जाना।
- सिक्किमी परिधान (बोकु) के सौंदर्य से प्रभावित हुई।
- पहाड़ी बच्चों को स्कूल जाने के साथ-साथ माँ-बाप का हाथ बँटाते देखा।

- पहाड़ी लोगों की मान्यता के अनुसार - "यहाँ देवी-देवताओं का निवास है; यहाँ जो गंदगी फैलाएगा मर जाएगा।" इस तथ्य से लेखिका का परिचित होना। (कोई एक उदाहरण अपेक्षित)

खंड-'घ'

11. स्वयं करे

12. स्वयं करे

13. स्वयं करे